CRITERIAN-III

3.3.2.:-

Number of books and chapters in edited volumes/books Published and Papers Published in National/International Conference Proceeding per teacher during last five years

2021-2022

20-21

AN ISBN E-BOOK

B

LIFE AND MOVEMENTS OF BIRSA MUNDA

EDITED BY
DR. MANOJ SAHARE

ISBN-978-81-928733-3-6

LIFE AND MOVEMENTS OF BIRSA MUNDA

EDITOR
DR. MANOJ SAHARE

Arts & Science College
100
KURHA

ISBN-978-81-928733-3-6

Patrons

Smt.Vasudhatai Deshmukh, President, PWS

Prof. Abhay Deshmukh, Secretary, PWS

Principal Shri.S.N.Deshmukh, Admin.Director, PWS

People's Welfare Society(PWS), Amravati, Maharashtra

Editorial Board

Dr.Manoj Sahare

Dr.V.D.Chore

Dr.N.S.Chaware

Prof. V.M.Vasule

Dr.A.K.Khadse

Prof. R.B.Pawar

Prof.M.A.Vaidya

Peer Team for Review

Dr.P.A.Raut

Dr.J.Y.Padole

Dr.A.N.Bhorjar

Dr.A.S.Vaidya

Editorial Correspondence:

- Late N.A.Deshmukh
  Arts and Commerce College
  Chandur Bazar,
  Distt.Amravati
  Maharashtra, India
- 9420417541
- mpsahareamt@gmail.com
- www.nadmchb.org

Publisher

Dr.V.D.Chore

Principal, Late N.A.Deshmukh Arts and Commerce College,

Chandur Bazar, Distt.Amravati, Maharashtra

ISBN-978-81-928733-3-6

ISBN-978-81-928733-3-6

Section-II
HINDI

Sr. No.	Chapter	Author	Page No.
1	अदम्य साहस एवं वीरता का पर्याय: बिरसा मुंडा	माधवी	1-4
2	बिरसा मुंडा का जीवन	डॉ. राम रहीस और कमलेश कुमारी	5-8
3	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे बिरसा मुंडा का अविस्मरणीय योगदान	डॉ. मोनिका मित्तल	9-14
4	बिरसा मुंडा का जीवन कार्य	राकेश चौहान	15-20
5	बिरसा मुंडा का क्रांतीकारी कार्य	प्रा. निलेश पी. चोपडे	21-24
6	भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मे बिरसा मुंडा का योगदान	डॉ. विभा देशपांडे	25-28
7	बिरसा मुंडा की जीवनी: एक परिचय	प्रशांत कुमार	29-32
8	बिरसा मुंडा का जीवन और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान	सौरभ मौर्या	33-37
9	बिरसा मुंडा का मानवता के लिये संदेश	रामसिया चर्मकार	38-45
10	बिरसा मुंडा: जननायक और स्वतंत्रता सेनानी	डॉ. अनिल महादेवराव तिरकर	46-52
11	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे बिरसा मुंडा का योगदान	संजीव कुमार सिंह	53-60

Section-III
MARATHI

Sr. No.	Chapter	Author	Page No.
1	क्रांतिसूर्य बिरसा मुंडा यांचा भारतीय आदिवासी समुदायावर कार्य व प्रभाव	दत्तात्रय निवृत्ती रावण	1-11
2	आदिवासी कवितेतून बिरसा मुंडा यांचे आलेले क्रांतिकारी चित्रण: एक आकलन	डॉ. ललित अधाने	12-21
3	बिरसा मुंडा क्रांतिकारी महानायकाचे कार्य	डॉ. कविता राजभोज	22-32
4	बिरसा मुंडा एक लोकनायक	डॉ. रवी सोरते	33-40
5	राष्ट्रवादाचा अग्रदूत आणि जननायक: बिरसा मुंडा	डॉ. कविता तातेड	41-49
6	नागवंशीय आदिवासी बिरसा मुंडा आणि बौद्धधम्म	डॉ. प्रशांत बोबडे	50-61

Principal
Arts & Sci. College
Kurha

ISBN-978-81-928733-3-6

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बिरसा मुंडा का योगदान

डा. विभा प्र. देशपांडे
कला व विज्ञान महाविद्यालय
कुंभा

भारत भूमि पर कई ऐसे नायक पैदा हुए जिनका नाम इतिहास के पन्नो पर स्वर्णिम अक्षरो में लिखा गया है, उन्ही में से एक है बिरसा मुंडा। कहा जाता है की एक छोटी सी आवाज भी दमदार बन सकती है बस उसके बोलने में दम होना चाहिए। उसका जीता जागता उदाहरण माने बिरसा मुंडा जिन्होंने भारत के सामाजिक सांस्कृतिक व स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को वर्तमान झारखंड राज्य के रांची जिले में उलिहाती गांव में हुआ था। उनकी माता का नाम करमी हातू और पिता का नाम सुगना था । यह समय अंग्रेजी शासन का था। आदिवासी अपने इलाके में किसी का भी हस्तक्षेप सहन नही कर सकते थे। इतिहास के पन्नो पर नजर डाले तो अंग्रेजो के विरुद्ध छिडे संग्राम में आदिवासी जनजातियों के संग्राम को हमेशा ही महत्वपूर्ण माना गया है।

यह संग्राम किसी राजनितीक पदो को प्राप्त करने के लिए नही था और ना ही किसी व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये था बल्कि अपने देश, अपनी धरती माता की सम्प्रभुता के लिये यह महान संग्राम था। यह संग्राम अतुलनीय था। विविध रूपो में कम - अधिक प्रमाण में यह संग्राम वर्तमान में भी जारी हैं।

Arts & Science College 160 KUMBHA

ISBN-978-81-928733-3-6

इसी प्रकार का एक स्वतंत्रता संग्राम हआ -बिरसा मुंडा के नेतृत्व में चलने वाला उलगुलान। यह एक ऐसा संग्राम था जिसमें सामाजिक सांस्कृतिक राजनीति के सभी सूत्र आपस में उलझे हुए थे। बिरसा मुंडा के महान आंदोलन पर जो पुस्तक प्रकाषित हुई थी वह अंग्रजी में थी फिर भी इसका गहरा प्रभाव सिर्फ आदिवासी आंदोलन झारखंड के साहित्य व समाज पर ही नहीं बल्कि संम्पूर्ण ऐतिहासिक लेखन के क्षेत्र पर पडा और बिरसा मुंडा के रूप में एक राष्ट्रीय नेतृत्व उभरकर सामने आए। कम - अधिक प्रमाण में आदिवासी बिरसा का आदोलन अभी भी जारी हैं और उसकी अनिवार्यता व प्रासंगिकता आज भी हैं। आदिवासीयो को लगातार जल जंगल जमीन से और प्राकृतिक संसाधनों से बेदखल किया जाता रहा है और वो निरंतर इसके खिलाफ आवाज उठाते रहे हैं। 1895 में बिरसा मुंडा ने अंगजो द्वारा लागू की गई जमींनदारी प्रथा और राजस्व व्यवस्था के विरुद्ध लडाई के साथ ही जल जंगल जमीन की जंग भी जारी की व सूदखोर महाजनो के खिलाफ मैदाने जंग का एलान किया क्योंकि महाजन (दिकू) कर्ज के बदले उनके जमीन पर कब्जा कर लेते थे स इसलिए यह विद्रोह नही बल्कि आदिवासियो की संस्कृति अस्मिता स्वायतता निष्कपटता को बचाने के लिए आंदोलन था। सुप्रसिद्ध साहित्यकार तथा लेखिका रमणिका गुप्ता ने आदिवासियो पर लिखा ग्रंथ आदिवासी अस्मिता का संकट इसमें उन्होने कहा है कि- रेलो के विस्तार के लिए जब अंग्रेजो ने मानभूम दामिन -ई- कोह (संथाल परगना) इस इलाके के जंगलो को काटना शुरू किया तब बहुत बडी संख्या में आदिवासी विस्थापित होने लगे साथ ही वो जिस जमीन पर खेती करते थे उस जमीन को जमींनदारो और दलालो ने आपस में बांटकर राजस्व की नयी व्यवस्था लागू कर दी। इन सब अत्याचारो के खिलाफ आदिवासी संगठित होकर आंदोलन करने के लिए

ISBN-978-81-928733-3-6

मजबूर हुए और उन्होने विद्रोह करना प्रारंभ किया

बिरसा मुंडा जो कि बचपन से ही कुशाग्र बुद्धी के थे साथ ही सामाजिक परिस्थिती से अनभिज्ञ नहीं थे। उनके पिताजी चाहते थे कि बेटा अच्छा पढे इस उद्देश्य से उन्होंने मिशनरी स्कूल में उनका दाखला करवाया लेकिन वहा ईसाई धर्म का पाठ पढाया जाता था जिसके खिलाफ उन्होंने मत व्यक्त करना प्रारंभ किया। स्कूल छोडकर अपने आपको सामाजिक कार्यो हेतु झोक दिया। जैसे की कहा जाता है पूत के पांव पालने में वाली कहावत बिरसा के बारे में सही साबित हुई। इसके बाद बिरसा ने पिछे मुडकर नहीं देखा। लगभग 1890 के करीब बिरसा वैष्णव धर्म की ओर अग्रेसित हुए और अपने समाज बांधव को अंधश्रद्धा अंधभक्ति से बाहर निकालने का प्रयत्न करने लगे। आदिवासी बांधव किसी भी महामारी को देवी का प्रकोप मानते थे। ऐसे में उनको समझाने और महामारी से बचने के उपाय बताते। इससे किस प्रकार से लडा जाय यह समझाते। इस प्रकार अपने समुदाय को हर तरह से जागृत करने का वे प्रयत्न करने लगे। उनके भोजन की व्यवस्था तन ढाकने के लिए कपडे बढती हुई गरीबी साथ ही इंडियन फारेस्ट एक्ट 1882 के कारण छीन लिये गये जंगल इन सब के खिलाफ बिरसा ने हथियार उठाए और उलगुलान प्रारंभ हो गया। किंतु अंग्रेजो के खिलाफ जंग करना इतना आसान काम नही था। क्योंकि संख्या और संसाधन दोनो ही कम होने के कारण बिरसा ने छापामार लडाई का सहारा लिया। पूरे आसपास के इलाके में उनके नाम से पुलिस आतंकित हो उठी उस जमाने में अंग्रेजोने बिरसा के नाम 500 रू. का इनाम रखा। आखिर अंग्रेजो और बिरसा के बीच अंतिम और निर्णायक जंग 1900 में टूम्बरी (राची) के पहाडी में हुई। काफी संख्या में आदिवासी बिरसा के नेतृत्व में उतरे एवं सघर्ष जारी रहा परंतु इनके पास तीर कमान और

ISBN-978-81-928733-3-6

अंग्रजो के पास तोप और बंदूक। आखिर आदिवासी बांधव कहा तक टिक पाते अंग्रेजो ने काफी संख्या में आदिवासी बांधवो को बेरहमी से मारा। परिणामस्वरूप अंग्रेज जीत तो गये परंतु बिरसा को ना पकड पाये। लेकिन किसी ने सच ही कहा है घर का भेदी लंका ढाहे। इसी उक्ति के स्वरूप बिरसा के जाति के लोगो ने ही 500 रु. के लिए उन्हे गिरफ्तार करवा दिया।

केवल 25 साल की उम्र में बिहार झारखंड ओडिशा में जननायक के रूप मे अपनी पहचान स्थापित की। आज भी आदिवासी जनता बिरसा मुंडा को भगवान के रूप में पूजती हैं। बिरसा ने आदिवासी समाज की दिशा बदलकर नवीन सामाजिक और राजनीतिक युग का सूत्रपात किया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के मुख्य कडी के रूप में बिरसा का नाम हमेशा अमर रहेगा।

संदर्भ:

1 ललित गर्ग - लेख।

***

Principal
Arts & Sci. College
Kurha

Arts & Science College
160
KURHA